SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

jk"Vªh; ekè;fed f'k{kk vfHk;ku d vrxZr xfBr 'kkyk çcèku ,oa fodkl lfefr d dk;ksZ dk vè;;u djuk

eèk —".kkuh] (Ph.D.), प्राचार्य,
ओमकार कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, पत्रकार कालोनी, गुना, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
eèk —".kkuh] (Ph.D.), प्राचार्य,
ओमकार कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज,
पत्रकार कालोनी, गुना, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 21/12/2022
Revised on : -----
Accepted on : 28/12/2022
Plagiarism : 01% on 21/12/2022

'kks/k lkj

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, समाज परिवर्तनशील तथा प्रगतिशील है। समाज के प्रगति का आधार शिक्षा है। शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास और सभ्यता के संरक्षण का प्रमुख आधार है। शिक्षा व्यक्ति के सभी प्रकार के संशयो का उन्मूलन करती हैं तथा कुशलता में वृद्धि करती हैं। शिक्षा का उद्देश्य बालकों के शारीरिक, मानसिक व भावनात्मक क्षमताओं का ऐसा समन्वयात्मक समायोजन करना हैं जिससे उनका सर्वांगीण विकास हो सके। शिक्षा द्वारा समाज का कल्याण तथा बालक का सर्वांगीण विकास तभी हो सकता है जब समाज की आवश्यकता अनुसार ही शिक्षा के उद्देश्य निर्धारित किये जाए। (लाल, 2012)

e[; 'kCn

'kkyk çcèk] 'kf{kd ;kstuk,] ukekdu·

çLrkouk

किसी भी देश की ताकत उसकी शिक्षा प्रणाली ही है। महात्मा गाँधी – "शिक्षा से मेरा अभिप्राय उस प्रक्रिया से हैं जो बालक और मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क व आत्मा का सर्वोत्कृष्ट विकास है।"

प्रत्येक राष्ट्र अपने भविष्य का दर्शन अपने बालको में करता है जो कल का भावी नागरिक होगा। शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा बालको का भविष्य सवारकर राष्ट्र का भविष्य उज्जवल किया जा सकता है। शिक्षा द्वारा व्यक्ति को एक सभ्य नागरिक के रूप में समाज के लिए तैयार किया जाता है जो स्वयं तथा समाज का विकास करने के लिए प्रयासरत् रहता है। समाज में यह प्रक्रिया व्यक्ति के समाजीकरण से प्रारम्भ होती है। किसी भी व्यक्ति का समाजीकरण उसके परिवार से ही शुरू होता होता है। व्यक्ति अपने परिवार से जो कुछ भी रीति, रीवाज,

संस्कार, सीखता है उसे अनौपचारिक रूप से सीखना कहा जाता है। समाज की आवश्यकताओ को ध्यान में रखते हुए समाज में प्रसिद्धी प्राप्त व्यक्तियों तथा विद्वानों ने विद्यालयों की स्थापना की जिसमें बालक तथा व्यक्ति को सीखने के लिए औपचारिक रूप से व्यवस्था की गयी जिसे औपचरिक शिक्षा भी कहा जाता है। (मालवीय, 2012)

भारत वर्ष में शिक्षा देने के तीन अभिकरण माने जाते हैः

1. अनौपचारिक अभिकरण
2. औपचारिकोत्तर अभिकरण
3. औपचारिक अभिकरण

jk"Vªh; ekè;fed f'k{kk vfHk;ku dk bfrgkl

भारत की नई शिक्षा नीति और योजना कार्यक्रम 1992 के सिफारिशों के अनुक्रम में भारत सरकार ने अलग अलग समय में माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के बच्चों की सहायता के लिए विभिन्न योजनाए आरंभ की। बालिका छात्रावास तथा स्कूलों में सूचना और प्रौद्योगिकी की योजनाये, भारत में गुणवत्ता युक्त माध्यमिक शिक्षा संवाहनीय बनाने के उद्देश्य से आरम्भ की गयी। माध्यमिक शिक्षा के सर्वव्यापीकरण के लिए वर्ष 2009 में राष्ट्रीय सरकार,राज्य सरकार और स्थानीय स्वशासन की भागीदारी में राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान योजना का प्रारंभ किया गया। राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान भारत सरकार की केन्द्रीकृत योजना हैं जो माध्यमिक शिक्षा तक पहुँच बढ़ाने और इसकी गुणवत्ता में सुधार के लिए शुरू की गयी। इस योजना का क्रियान्वयन मानव जन शक्ति सृजन करने, वृद्धि और विकास को तेज करने तथा समानता हेतु पर्याप्त परिस्थितियाँ उपलब्ध करने के साथ–साथ भारत में सभी को गुणवत्ता युक्त जीवन देने के लिए आरंभ की गयी। सर्व शिक्षा अभियान की व्यापक सफलता को देखते हुए इस योजना में सर्व शिक्षा अभियान की तरह बहुपक्षीय संगठनों, गैर–सरकारी संगठनो, सलाहकारी संस्थाओं तथा परामर्शदाताओ की सहायता प्राप्त की जाती है। इस योजना को विद्यालय स्तर पर क्रियान्वयन हेतु विद्यालयों में शाला प्रबंधन एवं विकास समिति का गठन किया जाता है जो राज्य एवं केंद्र सरकार द्वारा प्राप्त वित्तीय और आवश्यक संसाधनो का क्रियान्वन करती हैं। (स्कूल साक्षरता विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय)

ekè;fed f'k{kk dk fodkl

माध्यमिक शब्द का अर्थ होता है मध्य की। माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक एवं उच्च शिक्षा के मध्य की शिक्षा होती है। आज किसी भी देश में माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक और उच्च शिक्षा के बीच की कड़ी है, यह शिक्षा अपने में पूर्ण इकाई होती है। माध्यमिक शिक्षा को किस आयु से किस आयु तक अर्थात् किस– कक्षा से किस कक्षा तक दी जाये तथा इसकी पाठ्यचर्या क्या हो इस विषय में विभिन्न देशों का विभिन्न निर्णय है। भारत में माध्यमिक शिक्षा को दो भागो में बाँटा गया है – माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक, माध्यमिक शिक्षा कक्षा 9–10 तक तथा उच्चतर माध्यमिक शिक्षा कक्षा 11–12 तक दी जाती है।

माध्यमिक शिक्षा के विकास से तात्पर्य समय के साथ–साथ इसमे होने वाली मात्रात्मक प्रगति एवं गुणात्मक उन्नयन से होता है। (कोठारी आयोग,1964–66) भारत में माध्यमिक शिक्षा का प्रारम्भ इसाई मिशानिरियों के द्वारा माना जाता है। प्रारम्भ में पुर्तगाली ईसाई मिशनरियों ने प्राथमिक विद्यालय के साथ–साथ माध्यमिक शिक्षा संस्थाओं की स्थापना की परन्तु इस समय की माध्यमिक शिक्षा का उद्देश्य अलग था। "शिक्षा संस्थाओं ने मिशानिरियों को भारतीयों से संपर्क स्थापित करने और उन्हें अपने धार्मिक नियमों एवं परम्पराओं से अवगत कराने का अवसर प्रदान किया। (डा.डी.ओ.एलेन) इसके बाद सन 1613 से 1731 के बीच डच, फ़्रांसिसी, अंग्रेजी मिशनिरियों ने माध्यमिक शिक्षा के विकास के लिय अनेक माध्यमिक विद्यालयों की स्थापना की। भारत में नई शिक्षा पद्धति का आविर्भाव अंग्रेजी मिशनरियों से हुई।

Hkkjr dh Lora=rk dh i'pkr ekè;fed f'k{kk dk fodkl

15 अगस्त सन 1947 को भारत की स्वतंत्रता के बाद सन 1952 में भारत सरकार द्वारा माध्यमिक शिक्षा आयोग

या मुदालियर आयोग का गठन किया गया जिसने यह सुझाव दिया कि:

- पाठ्यक्रम में व्यावहारिकता लाने के साथ–साथ ही तीन भाषायों के अध्ययन पर बल दिया।
- उत्तीर्ण छात्रों में से 50 प्रतिशत छात्रों को व्यावसायिक शिक्षा प्रदान की जाए।
- माध्यमिक स्तर पर नवीन शिक्षण–नीतियों को अपनाया जाए।
- 10 वर्षीय शिक्षा के बाद हाई स्कूल विद्यालयों की परीक्षा होनी चाहिए तथा माध्यमिक स्तर पर प्रवेश दिया जाना चाहिए।
- हायर सेकेंडरी के पश्चात् 3 वर्ष का डिग्री पाठ्यक्रम।
- माध्यमिक स्तर पर विविध पाठ्यक्रम चलायें जाये।

इसके बाद सन 1952 में राष्ट्रीय शिक्षा आयोग या कोठारी आयोग का गठन किया गया। इस आयोग ने माध्यमिक शिक्षा के विकास के लिये निम्नलिखित सुझाव दिये:

- माध्यमिक शिक्षा स्तर पर छात्रों की संख्या नियमित करने के लिये (अ) माध्यमिक विद्यालयों की उचित स्थापना (ब) स्तर मान में वृद्धि (स) योग्य छात्रों को बाह्य परीक्षा तथा विद्यालय रिकार्ड के परिणामों के आधार पर चुनने का आयोजन किया जाए।
- माध्यमिक स्तर पर बालिकाओं की शिक्षा का प्रसार करने के लिए विशेष प्रयत्न किये जाये।
- बालिकाओं के लिये पृथक माध्यमिक विद्यालय स्थापित किए जाए तथा उनके लिये छात्रावास एवं छात्रवृतियो की व्यवस्था की जाए।

भारत सरकार द्वारा सन् 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति को पारित किया गया जिसमे माध्यमिक शिक्षा के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये गये:

- व्यवसाय पर आधारित शिक्षा का विकास।
- नई एवं परिवर्तित तकनीकी के अनुरूप जन शक्ति को प्रेरित करना।
- निरक्षरता के निवारणार्थ बहुलक्षी प्रयास, सरकार एवं गैर–सरकारी, अनौपचारिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, किसान साक्षरता, अनवरत शिक्षा, मुक्त विद्यालयों एवं स्वैच्छिक प्रयास आदि।
- 10+2+3 की शिक्षा संरचना को लागू करने पर बल दिया गया।

ekè;fed f'k{kk dk mí';

भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् लोकतंत्रात्मक सरकार, शिक्षा शास्त्रियों, दार्शनिकों तथा समाज–सुधारकों ने माध्यमिक शिक्षा के नवीन उद्देश्य निर्धारित करने की आवश्यकता अनुभव की ताकि माध्यमिक शिक्षा को भारतीय संस्कृति पर आधारित किया जा सके और लोकतन्त्रात्मक समाज को सफल बनाया जा सके।

जवाहर लाल नेहरू के शब्दों में "देश में महान परिवर्तन हो चुके है और शिक्षा–प्रणाली भी उन्हीं के अनुकूल होनी चाहिए। शिक्षा की समूची आधार भूमि में क्रांति होनी चाहिए"।

वर्तमान समय देश की आवश्यकताएं समय–समय पर पर बदलती रहती है। भारत की सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक स्थितियाँ तेजी के साथ बदल रही है इसलिये माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण वर्त्तमान परिवर्तन के अनुसार होना चाहिए। "माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्यों का समय–समय पर परिवर्तित होते रहना स्वाभाविक है।" (एन.पी.ई.)

ekè;fed f'k{kk dk egÙo

भारत में माध्यमिक शिक्षा किशोर बच्चों की शिक्षा होती हैं। इस अवस्था में किशोरो में शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक अनेक परिवर्तन होते है। इन परिवर्तनों की गति इतनी तीव्र होती है कि इनको अगर सही एवं सकारात्मक

ISSN : **2581-6918 (E)**, 2582-1792 (P)
Year-05, Volume-05, Issue-04

दिशा में निर्देशित न किया जाय तो किशोर समाज से विरक्त होकर अनैतिक कार्य करना प्रारम्भ कर देते है। अतः किशोरों की आतंरिक शक्ति को एक सकारात्मक दिशा में निर्देशित करने में और उनकी क्षमता के अनुसार अग्रसर करने में माध्यमिक शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। (लाल, 2013)

निम्न तथ्यों के आधार पर माध्यमिक शिक्षा के महत्त्व को स्पष्ट किया जा सकता है:

माध्यमिक शिक्षा किसी राष्ट्र की जनशक्ति का आधार होती है– माध्यमिक स्तर पर बालक में सोचने–समझने की शक्ति और कार्य करने की क्षमता का विकास किया जाता है। माध्यमिक स्तर बालको को एक पूर्ण मानव बनाने का प्रयत्न किया जाता है जिससे किसी भी राष्ट्र की जनशक्ति का विकास होता है।

ekè;fed f'k{kk dk lkoHkkSfedj.k भारत सरकार द्वारा प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण के लिए सन् 2001 में सर्व शिक्षा अभियान नामक योजना को लागू किया गया। इस योजना की सफलता को दृष्टिगत रखते हुए सन् 2009–10 में भारत सरकार द्वारा माध्यमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण के लिए राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान नामक योजना को लागू किया गया गया। माध्यमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण से तात्पर्य है कि भारत वर्ष के सभी 14–18 वर्ष के बालकों को शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध करना तथा उसकी पहुँच और सुविधा सुनिशचित करना ताकि सभी बालक/बालिका माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर सके। (गुप्ता, 2014)

vè;;u dh vko';drk

माध्यमिक शिक्षा किसी भी देश तथा व्यक्ति के लिए रीढ़ मानी जाती है। (कोठारी आयोग,1964–66) माध्यमिक शिक्षा युवाओं को एक दिशा में निर्देशित करने में मुख्य भूमिका निभाती है। माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्यों का समय–समय पर परिवर्तित होते रहना स्वाभाविक है। (राष्ट्रीय शिक्षा निति, 1986) इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण के लिए सर्वशिक्षा अभियान चलाया। इस अभियान की सफलता के बाद माध्यमिक शिक्षा सभी बालको को उपलब्ध कराने की दृष्टि से 2009 में राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान योजना का आरम्भ किया गया। माध्यमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण के परिपेक्ष्य में राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान की सफलता के विषय में बिहार राज्य के परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन में इन्होने पाया कि राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के लागू होने से बिहार राज्य में माध्यमिक शिक्षा की आधारभूत संरचना, नामांकन, शिक्षण प्रशिक्षण, शिक्षक छात्र अनुपात एवं लिंग विषमताओं की दृष्टि से काफी विकास हुआ है। अर्थात् माध्यमिक शिक्षा अभियान के लागू होने पर बिहार राज्य में माध्यमिक शिक्षा में नामांकन, शिक्षक छात्र अनुपात तथा शिक्षण प्रशिक्षण में विकास हुआ है। (रत्न एवं सिन्हा, 2014) राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के तहत नवाचार को बढ़ावा देने के लिए योजनाओं के अध्ययन में यह प्राप्त किया कि प्रत्येक राज्य की सरकारें राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के तहत वर्तमान समय के अनुसार माध्यमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण के लक्ष्य को प्राप्त करना चाहती है। (संगीता एवं कुमार, 2013) राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान में अनेक योजनाओ को सम्मलित किया गया है। आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा के लोक व्यापीकरण की दृष्टि से बालिकाओं को दी जाने वाली सुविधाओं और इसके प्रभावों का विश्लेषण अध्ययन में पाया कि इस योजना से बालिकाओं की नामांकन संख्या में वृद्धि दर्ज हुई है एवं उनकी शिक्षा के प्रति रूचि में वृद्धि हुई है। (देशमुख, 1993) राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के क्रियान्वयन के लिए विद्यालयी स्तर पर अनेक समितियाँ तथा उपसमितियाँ बनायी जाती है। शाला प्रबन्धन समिति के सहभागिता का शालेय क्रियाकलाप पर पड़ने वाले प्रभाव के अध्ययन में पाया कि शाला प्रबन्ध समिति की सहभागिता से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि हुई है।

mís';

1. शाला प्रबंधन एवं विकास समिति के द्वारा विद्यालय में भौतिक संसाधनों के लिए किये गये प्रयासों का अध्ययन करना।
2. शाला प्रबंधन एवं विकास समिति के शिक्षा गुणवत्ता एवं सुधार योजनाओं का अधययन करना।

3. शाला प्रबंधन एवं विकास समिति के द्वारा विद्यालयों में व्यावसायिक शिक्षा की जागरूकता एवं प्रशिक्षण हेतु किये गये कार्यों का अध्ययन करना।
4. शाला प्रबंधन एवं विकास समिति के द्वारा निःशक्त विद्यार्थियों के लिए शिक्षा एवं सुविधा के लिए किये गये कार्यों का अध्ययन करना।

ç;|ä inks dh lfØ;kRed ifjHkk"kk

- jk"Vh; ekè;fed f'k{kk vfHk;ku% प्रस्तुत शोध मे केन्द्र सरकार द्वारा संचालित राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों हेतु संचालित योजना।
- ekè;fed Lrj dk Nk=% राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान द्वारा संचालित स्कूल जिसमें कक्षा 8 से 10 तक के छात्र।
- Nk=ksa dk ukekadu% राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के कक्षा 8 से 10 मे प्रवेशित छात्रों की संख्या जो इन कक्षाओ में प्रवेश करते है।
- Nk=ksa dk M‚i vkmV% माध्यमिक स्तर के विद्यालय के विद्यार्थियों के बिच में शिक्षण कार्य को छोड़ देते है या किसी कारण वश छोड़ना पडता है उसे ड्रॉपआउट कहते है।

fu"d"kZ

राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान पर किये गये शोध शोधार्थी को शोध करने के लिए पृष्ठभूमि तैयार करने में मदद कर रहें है। इन शोधो में राष्ट्रिय माध्यमिक शिक्षा अभियान के लिए विभिन्न शिक्षकों के प्रत्यक्षीकरण, राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान में नवाचार के लिए वित्त की समस्या, राज्य के परिपेक्ष्य में राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान की सफलता पर अध्ययन किया गया है। शाला प्रबंधन समिति की सहभागिता से विद्यालयी परिवेश में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

विकास खण्ड श्रोत केन्द्रों के क्रिया–कलापों के प्रभाव का अध्ययन, प्राथमिक शिक्षा में स्थानीय पहल बिहार की ग्राम शिक्षा समिति के कार्यों का अध्ययन किया गया है जो शोधार्थी को शोध कार्य के लिए अभिप्रेरित कर रही है। माध्यमिक शिक्षा के लोकव्यापीकरण के लिए भारत सरकार द्वारा संचालित योजना राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान योजना के लक्ष्य एवं उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रत्येक राज्य में राज्य माध्यमिक शिक्षा अभियान योजनाओं का संचालन राज्य सरकार द्वारा किया जाता है। राज्य माध्यमिक शिक्षा अभियान के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु प्रत्येक शासकीय माध्यमिक विद्यालय में शाला प्रबन्धन एवं विकास समिति का गठन किया जाता है परन्तु इस समिति के कार्यों पर कोई शोध कार्य नहीं किया गया है।

lUnHkZ lwph

1. शर्मा, आर.ए. (२००६), *भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास,* मेरठ, आर लाल बुक डिपो।
2. मालवीय, राजीव(२०१२), उदियमान भारतीय समाज में शिक्षक, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
3. लाल, रमन बिहारी (२०१२), *भारतीय शिक्षा का विकास एवं इसकी समस्यायें,* मेरठ, आर लाल बुक डिपो।
4. सिंह, कर्ण (२००६), *भारत में शिक्षा प्रणाली का विकास,* लखीमपुर खीरी, गोविन्द प्रकाशन।
5. पाठक, पी. डी. (२००५), *भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें,* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
6. त्यागी, गुरुशरण दास (२००२), *भारत में शिक्षा का विकास,* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
7. दास, परमेन्दर एवं देव, प्रसेनजीत (२०१६), डिफरेंसेस इन परसेप्शन एमोंग टीचर्स अबाउट राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान इन वेस्ट बंगाल, *इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ़ मैनेजमेंट*

आईटी एंड सोशल साइंसेज, वॉल्यूम दृ ३, मार्च ३ , पृष्ठ सं. दृ ११०–१२२।

8. दास, परमेन्दर एवं देव, प्रसेनजीत (२०१६), आइसोलेशन बिटवीन हाई एंड लो लेवल ऑफ़ ओपिनियन एमोंग पेरेंट्स ऑफ़ वेस्ट बंगाल अबाउट राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान, *जर्नल ऑफ़ इंटरनेशनल अकादमिक रिसर्च फॉर मल्टीदिससिप्लिनारी,* वॉल्यूम ४, फरवरी, पृष्ठ सं.– २८८–२९८।

9. सिन्हा, आदित्य एवं रत्न, पारस, (२०१४), राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान का बिहार राज्य के परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन, *भारतीय आधुनिक शिक्षा,* अक्टूबर, पृष्ठ सं.– ३०दृ३७

10. संगीता एवं कुमार जीतेन्द्र (२०१३), राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान प्रोमोटिंग इनोवेशन अंडर द स्कीम ऑफ़ (आर. एम.एस. ए.), *एजुकेशननिया कांफाब,* वॉल्यूम २ , सितम्बर, पृष्ठ सं.– १४ –२०

****